आरती श्री चन्द्रप्रभु स्वामी की

म्हारा चन्द्र प्रभु जी की सुन्दर मूरत, म्हारे मन भाई जी।। टेक।।
सावन सुदि दशमी तिथि आई, प्रगटे त्रिभुवन राईजी।।
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, दरशे देहरे मांही जी।।
सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि में कमल रचायाजी।।
मैंना सती ने तुमको ध्याया, पति का कुष्ठ हटाया जी।।
जिनमें भूत प्रेत नित आते, उनका साथ छुड़ाया जी।।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनाया जी।।
मानतुंग मुनि तुमको ध्याया, तालों को तोड़ भगाया जी।।
जो भी दुखिया दर पर आया उसका कष्ट मिटाया जी।।
अंजन चोर ने तुमको ध्याया, सूली से अधर उठाया जी।।
समवशरण में जो कोई आया, उसको पार लगाया जी।।
सेठ सुदर्शन तुमको ध्याया, सूली से उसे बचाया जी।।
ठाडो सेवक अर्ज करै छै, जनम-मरण मिटाओ जी।।
'नवयुग मण्डल' तुमको ध्यावै बेड़ा पार लगाओ जी।।